मैं मनुष्य होने में विश्वास करता हूं

मुझे गर्व है कि मैं एक मनुष्य हूं और आज व अभी जीवित हूं तथा कर्म करने की क्षमता से भी युक्त हूं। आश्चर्य है कि मेरी श्वास बिना किसी प्रयत्न के प्रभुकृपा से अनवरत चल रही हैं। मैं मनुष्य से अधिक कुछ होने में विश्वास नहीं करता। क्योंकि मनुष्य शरीर में ही वह परम पुरुषार्थ किया जा सकता है जिससे जन्म-मरण के दुस्सह दुखों के भयानक सागर से पार पहुंचा जा सकता है। जहां, पहुंचकर ही जीव को शाश्वत सुख-शांति उपलब्ध होती है। मनुष्य शरीर में ही प्रार्थना व प्रयत्न करने की क्षमता मिली हुई है, जो क्षमता पाना देवों के लिए भी दुर्लभ है।